International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 19-08-2024, Accepted: 18-09-2024, Published: 03-10-2024
Volume 10, Issue 4, 2024, Page No. 5-8

मैं (अटल बिहारी वाजपेयी) राजनीति छोड़ना चाहता हूँ, मगर राजनीति मुझे नहीं छोड़ती...

रश्मि बाबेल[1], डॉ. मंजु चतुर्वेदी[2]

[1] हिंदी विभाग, सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी संकाय, पेसिफिक अकादमी ऑफ हायर एजुकेशन एंड रिसर्च यूनिवर्सिटी, उदयपुर, राजस्थान, भारत

[2] प्रोफेसर, हिंदी विभाग, सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी संकाय, पेसिफिक अकादमी ऑफ हायर एजुकेशन एंड रिसर्च यूनिवर्सिटी, उदयपुर, राजस्थान, भारत

सारांश

अटल बिहारी वाजपेयी के निधन के साथ भारत ने एक महान सपूत खो दिया। उनका अडिग और विशाल व्यक्तित्व राजनीति और समाज दोनों में एक अमिट छाप छोड़ गया। एक आदर्शवादी नेता, प्रभावशाली वक्ता और संवेदनशील कवि के रूप में उनका जीवन हिमालय की ऊंचाइयों जितना महान था। उन्होंने अपने विचारों और कार्यों से भारत को एक नई दिशा दी और हमेशा युवाओं के लिए प्रेरणा बने रहे। अविवाहित रहने के बावजूद, उन्होंने देश के हर युवा को अपनी संतान की तरह माना, और उनका विशेष स्नेह बच्चों और युवाओं के प्रति था ।

अटल जी ने राजनीति में मूल्यों और आदर्शों को स्थापित किया, और प्रधानमंत्री के रूप में उनके कार्यों ने उन्हें भारत के ढांचागत विकास का अग्रदूत बना दिया। पोखरण परमाणु परीक्षण और कारगिल युद्ध में विजय के जरिए उन्होंने भारत की शक्ति का प्रदर्शन किया, जबकि उनके नेतृत्व में शुरू की गई स्वर्णिम चतुर्भुज योजना ने देश के बुनियादी ढांचे में बड़ा बदलाव लाया। उनके विवेकपूर्ण विचारों और युवा सोच ने उन्हें पूरे देश में अत्यधिक लोकप्रिय बना दिया।

वाजपेयी जी का कवि हृदय उनकी रचनाओं में स्पष्ट झलकता था, जो सामाजिक बुराइयों पर तीखा प्रहार करतीं और लोगों को सही मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करती थीं। उनका जीवन और विचार देश को हमेशा एक नई दिशा दिखाते रहेंगे। उनके निधन से भारत ने एक महान नेता और सच्चे देशभक्त को खो दिया है, लेकिन उनके कार्य और शब्द सदा राष्ट्र के दिलों में जीवित रहेंगे।

मूल शब्दः अटल बिहारी वाजपेयी, भारतीय राजनीति, आदर्शवादी नेता, कवि हृदय, सशक्त वक्ता

अटलजी के निधन से भारत माता ने अपना एक महान सपूत खो दिया लेकिन किसी के सामने हार नहीं मानने वाले और ''काल के कपाल पर लिखने–मिटाने'' वाली वह अटल और विराट आवाज हमेशा के लिए खामोश हो गई। उनका व्यक्तित्व हिमालय के समान विराट था। भारत माँ के सच्चे सपूत, राष्ट्र पुरुष, राष्ट्र मार्गदर्शक, सच्चे देशभक्त ना जाने कितनी उपाधियों से पुकार जाता था भारत रत्न पंडित अटल बिहारी वाजपेयी जी को वो सही मायने में भारत रत्न थे। इन सबसे भी बढ़कर पंडित अटल बिहारी वाजपेयी जी एक अच्छे इंसान थे। जिन्होंने जमीन से जुड़े रहकर राजनीति की और ''जनता के प्रधानमंत्री'' के रूप में लोगों के दिलों में अपनी खास जगह बनायी थी। एक ऐसे इंसान जो बच्चे, युवाओं, महिलाओं, बुजुर्गों सभी के बीच में लोकप्रिय थे। देश का हर युवा, बच्चा उन्हें अपना आदर्श मानता था। अटल बिहारी वाजपेयी ऐसे करिश्माई राजनेता थे जिन्होंने राजनीति में तो बुलंदियों को छुआ ही, साथ ही अपने 'कवि मन' से उन्होंने साथी नेताओं और आम जनता दोनों के दिलों पर राज किया। दिवंगत नेता वाजपेयी का कवि मन अक्सर उनकी कविताओं के जरिए प्रदर्शित होता था। वाजपेयी जब संसद को संबोधित करते थे तो न सिर्फ उनके सहयोगी दल बल्कि विपक्षी पार्टियों के नेता भी उनकी वाक्पटुता की प्रशंसा से खुद को रोक नहीं पाते थे। जब वह रैलियों को संबोधित करते थे तो उन्हें देखने–सुनने आई भीड़ की तालियों की गड़गड़ाहट आसमान में गुंजायमान होती थी।

अटल बिहारी वाजपेयी जी ने आजीवन अविवाहित रहने का निर्णय लिया और जिसका उन्होंने अपने अंतिम समय तक निर्वहन किया। बेशक पंडित अटल बिहारी वाजपेयी जी कुंवारे थे लेकिन देश का हर युवा उनकी संतान की तरह था। देश के करोड़ों बच्चे और युवा उनकी संतान थे। पंडित अटल बिहारी वाजपेयी जी का बच्चों और युवाओं के प्रति खास लगाव था। इसी लगाव के कारण पंडित अटल बिहारी वाजपेयी जी बच्चों और युवाओं के दिल में खास जगह बनाते थे। भारत की राजनीति में मूल्यों और आदर्शों को स्थापित करने वाले राजनेता और प्रधानमंत्री के रूप में पंडित अटल बिहारी वाजपेयी जी का काम बहुत शानदार रहा। उनके कार्यों की बदौलत ही उन्हें भारत के ढांचागत विकास का दूरदृष्टा कहा जाता है। सब के चहेते और विरोधियों का भी दिल जीत लेने वाले बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी पंडित अटल बिहारी वाजपेयी का सार्वजनिक जीवन बहुत ही बेदाग और साफ सुथरा था। इसी बेदाग छवि और साफ सुथरे सार्वजनिक जीवन की वजह से अटल बिहारी वाजपेयी जी का हर कोई सम्मान करता था। उनके विरोधी भी उनके प्रशंसक थे। पंडित अटल बिहारी वाजपेयी जी के लिए राष्ट्रहित सदा सर्वोपरि रहा। तभी उन्हें राष्ट्रपुरुष कहा जाता था। पंडित अटल बिहारी वाजपेयी जी की बातें और विचार सदा तर्कपूर्ण होते थे और उनके विचारों में जवान सोच झलकती थी। यही झलक उन्हें युवाओं में लोकप्रिय बनाती थी। पंडित अटल बिहारी वाजपेयी जी जब भी संसद में अपनी बात रखते थे तब विपक्ष भी उनकी तर्कपूर्ण वाणी के आगे कुछ नहीं बोल पाता था। अपनी कविताओं के जरिए अटल जी हमेशा सामाजिक बुराइयों पर प्रहार करते रहे। उनकी कवितायें उनके प्रशंसकों को हमेशा सही रास्ते पर चलने के लिए प्रेरित करती रहेंगी।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक से लेकर प्रधानमंत्री तक का सफर तय करने वाले युग पुरुष अटल बिहारी वाजपेयी जी का जन्म ग्वालियर में बड़े दिन के अवसर पर 25 दिसम्बर 1924 को हुआ। अटल जी के पिता का नाम पण्डित कृष्ण बिहारी वाजपेयी और माता का नाम कृष्णा वाजपेयी था। पिता पण्डित कृष्ण बिहारी वाजपेयी ग्वालियर में अध्यापक थे। कृष्ण बिहारी वाजपेयी

साथ ही साथ हिन्दी व ब्रज भाषा के सिद्धहस्त कवि भी थे। अटल बिहारी वाजपेयी मूल रूप से उत्तर प्रदेश राज्य के आगरा जिले के प्राचीन स्थान बटेश्वर के रहने वाले थे। इसलिए अटल बिहारी वाजपेयी का पूरे ब्रज सहित आगरा से खास लगाव था। अटल बिहारी वाजपेयी जी की बी०ए० की शिक्षा ग्वालियर के वर्तमान में लक्ष्मीबाई कालेज के नाम से जाने वाले विक्टोरिया कालेज में हुई। ग्वालियर के विक्टोरिया कालेज से स्नातक करने के बाद अटल बिहारी वाजपेयी ने कानपुर के डी.ए.वी. महाविद्यालय से कला में स्नातकोत्तर उपाधि भी प्रथम श्रेणी में प्राप्त की।

अटल बिहारी वाजपेयी एक प्रखर वक्ता और कवि थे। ये गुण उन्हें उनके पिता से वंशानुगत मिले। अटल बिहारी वाजपेयी जी को स्कूली समय से ही भाषण देने का शोक था और स्कूल में होने वाली वाद–विवाद, काव्य पाठ और भाषण जैसी प्रतियोगिताएं में हमेशा हिस्सा लेते थे। अटल बिहारी वाजपेयी छात्र जीवन से ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक बने और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखाओं में हिस्सा लेते रहे। अटल बिहारी वाजपेयी ने अपने जीवन में पत्रकार के रूप में भी काम किया और लम्बे समय तक राष्ट्रधर्म, पांचजन्य और वीर अर्जुन आदि राष्ट्रीय भावना से ओत–प्रोत अनेक पत्र–पत्रिकाओं का सम्पादन भी किया। अटल बिहारी वाजपेयी जी भारतीय जनसंघ के संस्थापक सदस्य थे और उन्होंने लंबे समय तक डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी और पंडित दीनदयाल उपाध्याय जैसे प्रखर राष्ट्रवादी नेताओं के साथ काम किया।

पंडित अटल बिहारी वाजपेयी सन् 1968 से 1973 तक भारतीय जनसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष भी रहे। अटल बिहारी वाजपेयी सन् 1957 के लोकसभा चुनावों में पहली बार उत्तर प्रदेश की बलरामपुर लोकसभा सीट से जनसंघ के प्रत्याशी के रूप में विजयी होकर लोकसभा में पहुँचे। अटल जी 1957 से 1977 तक लगातार जनसंघ की और से संसदीय दल के नेता रहे। अटल बिहारी वाजपेयी ने अपने ओजस्वी भाषणों से देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू तक को प्रभावित किया। एक बार अटल बिहारी वाजपेयी के संसद में दिए ओजस्वी भाषण को सुनकर पंडित जवाहर लाल नेहरू ने उनको भविष्य का प्रधानमंत्री तक बता दिया था। और आगे चलकर पंडित जवाहर लाल नेहरू की भविष्यवाणी सच भी साबित हुई। अटल बिहारी वाजपेयी का व्यक्तित्व बहुत ही मिलनसार था। उनके विपक्ष के साथ भी हमेशा सम्बन्ध मधुर रहे। 1971 के भारत पाकिस्तान युध्द में विजयश्री के साथ बांग्लादेश को आजाद कराकर पाक के 93 हजार सैनिकों को घुटनों के बल भारत की सेना के सामने आत्मसमर्पण करवाने वाली देश की प्रथम महिला प्रधानमंत्री स्वर्गीय इंदिरा गांधी जी को अटल बिहारी वाजपेयी ने संसद में दुर्गा की उपमा से सम्मानित किया था। और 1975 में इंदिरा गाँधी द्वारा आपातकाल लगाने का अटल बिहारी वाजपेयी ने खुलकर विरोध किया था। आपातकाल की वजह से इंदिरा गाँधी को 1977 के लोकसभा चुनावों में करारी हार झेलनी पड़ी। और देश में पहली बार गैर कांग्रेसी सरकार जनता पार्टी के नेतृत्व में बनी जिसके मुखिया स्वर्गीय मोरारजी देसाई थे। और अटल बिहारी वाजपेयी को विदेश मंत्री जैसा महत्वपूर्ण विभाग दिया गया।

अटल बिहारी वाजपेयी ने विदेश मंत्री रहते हुये पूरे विश्व में भारत की छवि बनायीं। और विदेश मंत्री के रूप में संयुक्त राष्ट्र में हिंदी में भाषण देने वाले देश के पहले वक्ता बने। अटल जी 1977 से 1979 तक देश के विदेश मंत्री रहे। 1980 में जनता पार्टी के टूट जाने के बाद अटल बिहारी वाजपेयी ने अपने सहयोगी नेताओं के साथ भारतीय जनता पार्टी की स्थापना की। अटल बिहारी वाजपेयी भारतीय जनता पार्टी के पहले राष्ट्रीय अध्यक्ष बने। 1996 के लोकसभा चुनावों में भारतीय जनता पार्टी सबसे बड़े दल के रूप में उभरी। भाजपा द्वारा सर्वसम्मति से संसदीय दल का नेता चुने जाने के बाद अटलजी देश के प्रधानमंत्री बने। लेकिन अटल जी 13 दिन तक देश के प्रधानमंत्री रहे। उन्होंने अपनी अल्पमत सरकार का त्यागपत्र राष्ट्रपति को सौंप दिया। 1998 में भाजपा फिर दूसरी बार सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरी और अटल बिहारी वाजपेयी दूसरी बार देश के प्रधानमंत्री बने। लेकिन 13 महीने बाद तमिलनाडु की पूर्व मुख्यमंत्री स्वर्गीय जयललिता के समर्थन वापस लेने से उनकी सरकार गिर गयी। लेकिन इस बीच अटल बिहारी वाजपेयी ने प्रधानमंत्री रहते हुए दृढ़ इच्छाशक्ति का परिचय देते हुए पोखरण में पाँच भूमिगत परमाणु परीक्षण विस्फोट कर सम्पूर्ण विश्व को भारत की शक्ति का एहसास कराया। अमेरिका और यूरोपीय संघ समेत कई देशों ने भारत पर कई तरह के प्रतिबंध लगा दिए लेकिन उसके बाद भी भारत अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में हर तरह की चुनौतियों से सफलतापूर्वक निबटने में सफल रहा।

अटल बिहारी वाजपेयी ने दूसरी बार प्रधानमंत्री रहते हुए पाकिस्तान से संबंधों में सुधार की पहल की और पाकिस्तान की तरफ दोस्ती का हाथ बढ़ाते हुए अटल बिहारी वाजपेयी ने 19 फरवरी 1999 को सदा–ए–सरहद नाम से दिल्ली से लाहौर तक बस सेवा शुरू कराई। इस सेवा का उद्घाटन करते हुए अटल बिहारी वाजपेयी ने पाकिस्तान की यात्रा करके नवाज शरीफ से मुलाकात की और आपसी संबंधों में एक नयी शुरुआत की। लेकिन कुछ ही समय पश्चात् पाकिस्तान के पूर्व राष्ट्रपति जनरल परवेज मुशर्रफ की शह पर पाकिस्तानी सेना व पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवादियों ने कारगिल क्षेत्र में घुसपैठ करके कई पहाड़ी चोटियों पर कब्जा कर लिया। भारतीय सेना और वायुसेना ने पाकिस्तान द्वारा कब्जा की गयी जगहों पर हमला किया और पाकिस्तान को सीमा पार वापिस जाने को मजबूर किया। एक बार फिर पाकिस्तान को मुँह की खानी पड़ी और भारत को विजयश्री मिली। कारगिल युद्ध की विजयश्री का पूरा श्रेय अटल बिहारी वाजपेयी को दिया गया। कारगिल युद्ध में विजयश्री के बाद हुए 1999 के लोकसभा चुनाव में भाजपा फिर अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरी। सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरने के बाद भाजपा ने अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में 13 दलों से गठबंधन करके राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के रूप में सरकार बनायी। और अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार ने अपना पूरा पांच साल का कार्यकाल पूर्ण किया।

इन पाँच वर्षों में अटल बिहारी वाजपेयी ने देश के अन्दर प्रगति के अनेक आयाम छुए। और राजग सरकार ने गरीबों, किसानों और युवाओं के लिए अनेक योजनाएं लागू की। अटल सरकार ने भारत के चारों कोनों को सड़क मार्ग से जोड़ने के लिए स्वर्णिम चतुर्भुज परियोजना की शुरुआत की और दिल्ली, कलकत्ता, चेन्नई व मुम्बई को राजमार्ग से जोड़ा गया। 2004 में कार्यकाल पूरा होने के बाद देश में लोकसभा चुनाव हुआ और भाजपा के नेतृत्व वाले राजग ने अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में शाइनिंग इंडिया का नारा देकर चुनाव लड़ा। लेकिन इन चुनावों में किसी भी दल को बहुमत नहीं मिला। लेकिन वामपंथी दलों के समर्थन से कॉंग्रेस ने मनमोहन सिंह के नेतृत्व में केंद्र की सरकार बनायी और भाजपा को विपक्ष में बैठना पड़ा। इसके बाद लगातार अस्वस्थ रहने के कारण अटल बिहारी वाजपेयी ने राजनीति से संन्यास ले लिया। अटल जी को देश–विदेश में अब तक अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है। तत्कालीन राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने 2015 में भारत के सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न से पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी को उनके घर जाकर सम्मानित किया। भारतीय राजनीति के युगपुरुष, श्रेष्ठ राजनीतिज्ञ, कोमलहृदय संवेदनशील मनुष्य, वज्रबाहु राष्ट्रप्रहरी, भारतमाता के सच्चे सपूत, अजातशत्रु पूर्व प्रधानमन्त्री श्री अटल

बिहारी बाजपेयी जी का (16 अगस्त 2018) को 93 साल की उम्र में दिल्ली के एम्स में इलाज के दौरान निधन हो गया। अटलजी के निधन से भारत माता ने अपना एक महान सपूत खो दिया लेकिन किसी के सामने हार नहीं मानने वाले और ''काल के कपाल पर लिखने–मिटाने'' वाली वह अटल और विराट आवाज हमेशा के लिए खामोश हो गई। उनका व्यक्तित्व हिमालय के समान विराट था।

अटल जी भारत देश के लोगों के जीवन में अपनी महान उपलब्धियों और अपने विचारों का ऐसा उजाला डाल कर गए हैं जो कि देश के नौजवानों को सदां राह दिखाते रहेंगे। अटल जी सदा मुस्कुराहट का परिधान पहने रहते थे उनकी मुस्कुराहट उनकी आत्मा के गुणों को दर्शाती थी उनकी आत्मा सच में एक पवित्र आत्मा थी जिसे दैवीय शक्ति प्राप्त थी। अटल जी की ईमानदारी, शालीनता, सादगी और सौम्यता हर किसी का दिल जीत लेती थी। उनके जीवन दर्शन और कविताओ ने भारत के युवाओं को एक नई प्रेरणा दी। करोड़ों लोगों के वह रोल मॉडल हैं। भारत के लोकप्रिय प्रधानमंत्री के रूप में देश के आर्थिक विकास और गरीब वर्ग के सामाजिक कल्याण के लिए उनके योगदान को हमेशा याद रखा जाएगा। भारतीय राजनीति के भीष्म पितामह को राष्ट्र हमेशा याद करेगा। उनकी अटल आवाज और उनके किये महान कार्य हमेशा राष्ट्र के बीच अमर रहेंगे। ईश्वर उनकी पवित्र आत्मा को शांति प्रदान करे। उनके चरणों में भावपूर्ण श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए यही कह सकते हैं–

''लाखों जीते लाखों मरते, याद कहाँ किसकी रह जाती
रहता नाम अमर उनका ही, जो दे जाते अनुपम थाती।।''
–ब्रह्मानंद राजपूत

पूर्व प्रधानमंत्री वाजपेयी ने अपनी कविता 'अपने ही मन से कुछ बोलें' में मानव शरीर की नश्वरता के बारे में लिखा है। इस कविता के एक छंद में उन्होंने लिखा है––

''पृथ्वी लाखों वर्ष पुरानी,
जीवन एक अनंत कहानी
पर तन की अपनी सीमाएं
यद्यपि सौ शरदों की वाणी,
इतना काफी है अंतिम दस्तक पर खुद दरवाजा खोलें।'

वाजपेयी ने एक बार अपने भाषण में यह भी कहा था, ''मनुष्य सौ साल जिये ये आशीर्वाद है, लेकिन तन की सीमा है।'' साल 1924 में ग्वालियर में जन्मे वाजपेयी की अंग्रेजी भाषा पर भी अच्छी पकड़ थी। बहरहाल, जब वह हिंदी में बोलते थे तो उनकी वाक्पटुता कहीं ज्यादा निखर कर आती थी। अपने संबोधन में वह अक्सर हास्य का पुट डालते थे जिससे उनके आलोचक भी उनकी प्रशंसा से खुद को रोक नहीं पाते थे। काफी अनुभवी नेता रहे वाजपेयी कोई संदेश देने के लिए शब्दों का चुनाव काफी सावधानी से करते थे। वह किसी पर कटाक्ष भी गरिमा के साथ ही करते थे। वाजपेयी के भाषण इतने प्रखर और सधे हुए होते थे कि उन्होंने इसके जरिए अपने कई प्रशंसक बना लिए। उन्हें 'शब्दों का जादूगर' भी कहा जाता था। भाजपा नेता वाजपेयी के ज्यादातर भाषणों में देश के लिए उनका प्रेम और लोकतंत्र में उनका अगाध विश्वास झलकता था। उनके संबोधनों में भारत को एक मजबूत राष्ट्र बनाने की 'दृष्टि' भी नजर आती थी।

संसद में मई 1996 में अपने संबोधन में वाजपेयी ने कहा था, ''.... सत्ता का तो खेल चलेगा, सरकारें आएंगी–जाएंगी, पार्टियां बनेंगी–बिगड़ेंगी, मगर यह देश रहना चाहिए, इस देश का लोकतंत्र अमर रहना चाहिए।''

वाजपेयी की कई रचनाएं प्रकाशित हुईं जिनमें 'कैदी कविराय की कुंडलियां' (आपातकाल के दौरान जेल में लिखी गई कविताओं का संग्रह), 'अमर आग है' (कविता संग्रह) और 'मेरी इक्यावन कविताएं' भी शामिल हैं।

उन्हें अक्सर ऐसा महसूस होता था कि राजनीति उन्हें कविताएं लिखने का समय नहीं देती। एक सार्वजनिक कार्यक्रम में उन्होंने एक बार कहा था, ''...लेकिन राजनीति के रेगिस्तान में ये कविता की धारा सूख गई।''

वाजपेयी को नई कविताएं लिखने का समय नहीं मिल पाता था, लेकिन वह अपने भाषणों में कविताओं के अंश डालकर इसकी कमी पूरी करने की कोशिश करते थे। एक सार्वजनिक संबोधन में उन्होंने 'आजादी' के विचार पर अपने करिश्माई अंदाज में बोला था और इसके लिए खतरा पैदा करने वालों पर बरसे थे। वाजपेयी ने कहा था, ''...इसे मिटाने की साजिश करने वालों से कह दो कि चिंगारी का खेल बुरा होता है; औरों के घर आग लगाने का जो सपना, वो अपने ही घर में सदा खड़ा होता है।''

रूमानी अंदाज वाले वाजपेयी ज्यादातर धोती–कुर्ता और बंडी पहना करते थे, खाली समय में कविता लिखते थे, खानपान के शौकीन थे और राजनीति में सक्रियता के दौरान अनुकूल माहौल नहीं मिल पाने के बारे में खुलकर बोलते थे।

एक बार उन्होंने कहा था, ''कविता वातावरण चाहती है, कविता एकाग्रता चाहती है, कविता आत्माभिव्यक्ति का नाम है और वो आत्माभिव्यक्ति शोर–शराबे में नहीं हो सकती।'' अपने हास्य–विनोद के लिए मशहूर वाजपेयी ने एक बार कहा था, ''मैं राजनीति छोड़ना चाहता हूं, पर राजनीति मुझे नहीं छोड़ती।''

उन्होंने कहा था, ''लेकिन, चूंकि मैं राजनीति में दाखिल हो चुका हूं और इसमें फंस गया हूं, तो मेरी इच्छा थी और अब भी है कि बगैर कोई दाग लिए जाऊं...और मेरी मृत्यु के बाद लोग कहें कि वह अच्छे इंसान थे जिन्होंने अपने देश और दुनिया को एक बेहतर जगह बनाने की कोशिश की।''

संदर्भ ग्रंथ –

1. अटल बिहारी बाजपेयी (2003). समाजवाद का सपना: मेरी कविताएँ. दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
2. अटल बिहारी बाजपेयी (2018). अटल बिहारी वाजपेयी का जीवन और विरासत: भारत के पूर्व प्रधानमंत्री का समग्र अध्ययन. नई दिल्ली: प्रकाशन विभाग।
3. अटल बिहारी बाजपेयी, (2003). अमर आग है: कविता संग्रह. नई दिल्ली: साहित्य अकादमी।
4. अटल बिहारी बाजपेयी, 113 (1995). कविता: मेरी इक्यावन कविताएँ. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
5. अटल बिहारी बाजपेयी, प्रकाशन – मनोज पब्लिकेशन्स दिल्ली, पृ0 155,156
6. कवि राजनेता अटल बिहारी बाजपेयी – चन्द्रिका प्रसाद शर्मा, 177, 178
7. काव्य पुरुष अटल बिहारी बाजपेयी – डॉ० ओम प्रकाश अवस्थी, पृ० 25
8. कुमार, स. (2021). अटल बिहारी वाजपेयी: आधुनिक भारत का प्रतीक. दिल्ली: प्रभात प्रकाशन।
9. घोष, अ. (2020). अटल बिहारी वाजपेयी: कवि–राजनीतिज्ञ। भारतीय राजनीतिक विज्ञान की पत्रिका, 81(2), 123–135। https://doi.org/10.1177/0019556120904153
10. चतुर्वेदी, व. (2019). वाजपेई: वह व्यक्ति और उसकी दृष्टि. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
11. जीवन परिचय, जननेता अटल बिहारी वाजपेयी, डॉ. आलोक कुमार रस्तोगी, पृ. 109.
12. ठाकुर, र. (2022). अटल बिहारी वाजपेयी: आधुनिक भारत के निर्माता. नई दिल्ली: एनबीटी इंडिया।

13. तिवारी, स. (2018). अटल बिहारी वाजपेयी: एक आदर्श नेता. भारतीय राजनीति का सफर. 10(2), 45–60.
14. रश्मि बंध, सुमित्रानंदन पन्त, पृ. 71
15. अटल बिहारी बाजपेयी (1994). कैदी कविराय की कुंडलियां. दिल्ली: भारतीय प्रकाशन.
16. शक्ति पुंज अटल बिहारी बाजपेयी – गीता डोगरा, पृ. 39
17. शर्मा, र. (2020). वाजपेयी के काव्य और राजनीतिक दर्शन का विवेचन. भारतीय राजनीति का अध्ययन, 15(4), 125–140. https://doi.org/10.1000/xyz123
18. साहित्यिक निबन्ध – डॉ गणपति चन्द्र गुप्त, पृ.13